International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

धार्मिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्थाः इन्दौर पर्यटन सर्किट में उज्जैन (महाकालेश्वर) का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.शीतल कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, लोकमान्य तिलक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन, मध्यप्रदेश
अजय अहोरिया
शोधार्थी, लोकमान्य तिलक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन मध्यप्रदेश

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन "धार्मिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्थाः इन्दौर पर्यटन सर्किट में उज्जैन (महाकालेश्वर) का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर आधारित है, जिसका उद्देश्य धार्मिक पर्यटन के आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंक 129 पर्यटकों से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से संकलित किया गया, जबकि द्वितीयक समंक मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग की वर्ष 2023–2024 की रिपोर्टों से प्राप्त किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि उज्जैन, विशेष रूप से महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र है, जहाँ पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। अधिकांश पर्यटक धार्मिक उद्देश्य से यहाँ आते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र आस्था–आधारित पर्यटन पर केंद्रित है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है, जिससे होटल, परिवहन, पूजन सामग्री एवं लघु व्यवसायों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। साथ ही, रोजगार के अवसरों में वृद्धि एवं सेवा क्षेत्र के विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। यद्यपि पर्यटकों का संतुष्टि स्तर मध्यम से उच्च पाया गया, फिर भी आधारभूत संरचना एवं प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उज्जैन धार्मिक पर्यटन के माध्यम से आर्थिक विकास का एक सशक्त मॉडल प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी
धार्मिक पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, उज्जैन, इन्दौर पर्यटन सर्किट, पर्यटक व्यवहार, आर्थिक प्रभाव, पर्यटन विकास

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक संरचना में धार्मिक पर्यटन केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक, ऐतिहासिक और आर्थिक गतिशीलता का एक सशक्त आधार भी है। मध्यप्रदेश के उज्जैन नगर में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग इस दृष्टि से एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ धर्म, इतिहास और अर्थव्यवस्था एक साथ समन्वित रूप में विकसित होते हैं।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

महाकालेश्वर मंदिर भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जिसकी धार्मिक महत्ता प्राचीन ग्रंथों – पुराणों, महाभारत तथा कालिदास की रचनाओं में भी विस्तृत रूप से वर्णित मिलती है। यह मंदिर अपनी स्वयंभू, दक्षिणमुखी एवं मोक्षदायी स्वरूप के कारण विशेष प्रतिष्ठा रखता है। यहाँ दर्शन मात्र से मुक्ति प्राप्ति की मान्यता, लाखों श्रद्धालुओं को प्रतिवर्ष आकर्षित करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इल्तुत्मिश द्वारा 1235 ई. में मंदिर के विध्वंस के पश्चात, मराठा शासकों के प्रयासों से इसका पुनर्निर्माण हुआ, जिससे उज्जैन की धार्मिक पहचान पुनः स्थापित हुई। कालांतर में यह क्षेत्र न केवल धार्मिक केंद्र के रूप में, बल्कि एक विकसित पर्यटन एवं आर्थिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में उभरा।

वर्तमान समय में, महाकालेश्वर मंदिर केवल श्रद्धा का केंद्र नहीं रहा, बल्कि यह इन्दौर–उज्जैन पर्यटन सर्किट का प्रमुख आकर्षण बनकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सुदृढ़ कर रहा है। यहाँ आने वाले लाखों पर्यटक होटल, परिवहन, पूजन सामग्री, हस्तशिल्प एवं अन्य सेवाओं के माध्यम से व्यापक आर्थिक गतिविधियों को जन्म देते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महाकालेश्वर मंदिर के धार्मिक महत्व के साथ–साथ इसके वाणिज्यिक एवं आर्थिक प्रभावों का समग्र विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि धार्मिक पर्यटन किस प्रकार स्थानीय विकास का एक स्थायी साधन है।

उज्जैन केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, ज्योतिष, तंत्र, वेद और भक्ति परंपरा का जीवंत केंद्र है। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के आसपास स्थित ये स्थल उस व्यापक आध्यात्मिक परंपरा को दर्शाते हैं, जहाँ धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि ज्ञान, साधना और जीवन–दर्शन का समन्वय है।

- **महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर** यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी दक्षिणमुखी प्रतिमा इसे अद्वितीय बनाती है, जो तांत्रिक परंपरा से भी जुड़ी मानी जाती है। यहाँ की भस्म आरती विश्व प्रसिद्ध है, जो मृत्यु और जीवन के दार्शनिक सत्य को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। यह स्थल मोक्ष और काल–विजय की अवधारणा का केंद्र है।
- **महाकाल लोक कॉरिडोर** यह आधुनिक स्थापत्य और प्राचीन आध्यात्मिकता का संगम है। विशाल कॉरिडोर में भगवान शिव की विभिन्न लीलाओं और कथाओं को मूर्तियों व भित्ति चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। यह केवल पर्यटन आकर्षण नहीं, बल्कि शिव दर्शन का दृश्यात्मक अनुभव प्रदान करता है, जहाँ दर्शन और ज्ञान साथ–साथ चलते हैं।
- **काल भैरव मंदिर** यह मंदिर तंत्र साधना का प्रमुख केंद्र है। यहाँ भगवान काल भैरव को मदिरा अर्पित करने की परंपरा अत्यंत विशिष्ट है। भैरव को समय और मृत्यु के रक्षक के रूप में देखा जाता है, जो उज्जैन की दार्शनिक गहराई को और प्रखर बनाता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- **हरसिद्धि माता मंदिर** यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। यहाँ देवी के साथ दीप स्तंभ (लाइट टावर्स) विशेष आकर्षण हैं, जो नवरात्रि में अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह स्थल शक्ति, भक्ति और स्त्री–चेतना के आध्यात्मिक स्वरूप को दर्शाता है।
- **राम घाट (शिप्रा तट)** शिप्रा नदी के तट पर स्थित यह घाट धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र है। यहाँ प्रतिदिन होने वाली संध्या आरती और सिंहस्थ कुंभ मेला का आयोजन इसे वैश्विक पहचान दिलाता है। यह स्थल शुद्धि, स्नान और आध्यात्मिक पुनर्जन्म का प्रतीक है।
- **बड़ा गणेश मंदिर** महाकाल मंदिर के समीप स्थित यह मंदिर भगवान गणेश की विशाल प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ संस्कृत और ज्योतिष शिक्षा भी दी जाती है, जिससे यह स्थल केवल पूजा नहीं, बल्कि ज्ञान परंपरा का केंद्र भी बनता है।
- **मंगलनाथ मंदिर** इसे पृथ्वी का "शून्य मेरिडियन" या केंद्र बिंदु माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह मंगल ग्रह का जन्मस्थान है। यहाँ मंगल दोष निवारण के लिए विशेष पूजा की जाती है। यह स्थल उज्जैन की खगोलीय और ज्योतिषीय विरासत को दर्शाता है।
- **वेध शाला (जंतर–मंतर)** महाराजा जय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित यह वेधशाला प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ सूर्य, ग्रहों और समय की गणना के लिए विशेष उपकरण स्थापित हैं। यह उज्जैन को केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

2. अध्ययन के उद्देश्य

- उज्जैन (महाकालेश्वर) में धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना ।
- पर्यटकों के व्यवहार एवं व्यय पैटर्न का अध्ययन करना।

3. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में धार्मिक पर्यटन एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंक 129 पर्यटकों से एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से संकलित किया गया, जिससे उनके यात्रा उद्देश्य, व्यय पैटर्न, संतुष्टि स्तर तथा स्थानीय आर्थिक गतिविधियों पर प्रभाव से संबंधित जानकारी प्राप्त हुई।

वहीं द्वितीयक समंक मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित वर्ष 2023–2024 के आधिकारिक आँकड़ों से लिया गया, जिससे पर्यटकों की संख्या, वृद्धि दर एवं पर्यटन प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ। न्यादर्श चयन के अंतर्गत अध्ययन में कुल 129 पर्यटकों को सम्मिलित किया गया, जिनका चयन सुविधाजनक न्यादर्श पद्धति के आधार पर किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि का उपयोग करते हुए विभिन्न उत्तरों का वर्गीकरण एवं व्याख्या की गई, इसके अतिरिक्त, द्वितीयक आँकड़ों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा वर्ष 2023 एवं 2024 के बीच पर्यटक आगमन में हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन किया गया। समस्त समंक को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत कर अध्ययन को व्यवस्थित, स्पष्ट एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान किया गया।

4. द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण

तालिका 1

उज्जैन एवं महाकाल में पर्यटक आगमन (2023–2024)

स्थल	2023 – देशी	2023 – विदेशी	2023 – कुल	2024 – देशी	2024 – विदेशी	2024 – कुल	अंतर (कुल)
उज्जैन	52,841,802	65	52,841,867	73,227,586	0	73,227,586	+20,385,719
महाकाल	–	–	–	1,353,579	0	1,353,579	–

स्त्रोत– मध्यप्रदेश शासन, पर्यटन विभाग, विभागीय वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25

तालिका 2

प्रमुख पर्यटन स्थल (2024)

पर्यटन स्थल	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक
उज्जैन	73,227,586	0	73,227,586
महाकाल	1,353,579	0	1,353,579

स्त्रोत– मध्यप्रदेश शासन, पर्यटन विभाग, विभागीय वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तालिका 3

मध्यप्रदेश का कुल पर्यटन (2024)

क्षेत्र	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक
मध्यप्रदेश	13,31,76,410	1,67,535	13,33,43,945

स्त्रोत– मध्यप्रदेश शासन, पर्यटन विभाग, विभागीय वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि उज्जैन, विशेष रूप से महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के कारण, मध्यप्रदेश के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्ष 2023 की तुलना में 2024 में उज्जैन में कुल पर्यटकों की संख्या में लगभग 2 करोड़ से अधिक (20,385,719) की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जो धार्मिक पर्यटन की तीव्र वृद्धि को दर्शाती है। यह वृद्धि इस तथ्य की पुष्टि करती है कि उज्जैन इन्दौर पर्यटन सर्किट का एक प्रमुख आकर्षण बन चुका है।

महाकाल मंदिर के पृथक आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 में लगभग 13.53 लाख पर्यटक विशेष रूप से मंदिर दर्शन के लिए पहुँचे, जो इस स्थल की विशिष्ट धार्मिक पहचान को दर्शाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि विदेशी पर्यटकों की संख्या नगण्य है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह क्षेत्र मुख्यतः घरेलू धार्मिक पर्यटन पर आधारित है।

मध्यप्रदेश के कुल पर्यटन आँकड़ों की तुलना में उज्जैन का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अकेले उज्जैन में ही करोड़ों पर्यटक पहुँच रहे हैं। यह न केवल राज्य के पर्यटन विकास को गति प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय स्तर पर व्यापार, रोजगार, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र को भी सशक्त बनाता है। अतः इन आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उज्जैन (महाकालेश्वर) धार्मिक पर्यटन का एक सशक्त केंद्र बनकर उभरा है, जो न केवल आध्यात्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विकास का भी एक प्रमुख आधार बन चुका है।

5. प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण (129 उत्तरदाता)

तालिकाः 4

उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय संरचना

विवरण	वर्ग	संख्या	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	78	60.5%
	महिला	51	39.5%
	कुल	129	100%
आयु वर्ग	18–30 वर्ष	46	35.7%
	31–45 वर्ष	39	30.2%
	46–60 वर्ष	28	21.7%

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

	60 वर्ष से अधिक	16	12.4%
	कुल	129	100%
वैवाहिक स्थिति	विवाहित	74	57.4%
	अविवाहित	55	42.6%
	कुल	129	100%
शिक्षा स्तर	माध्यमिक	32	24.8%
	स्नातक	58	45.0%
	स्नातकोत्तर एवं अधिक	39	30.2%
	कुल	129	100%
व्यवसाय	नौकरीपेशा	49	38.0%
	व्यवसायी	31	24.0%
	छात्र	27	20.9%
	अन्य	22	17.1%
	कुल	129	100%

स्त्रोत– प्राथमिक समंक

उपरोक्त जनसांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 129 उत्तरदाताओं में पुरुषों की भागीदारी (60.5%) महिलाओं (39.5%) की तुलना में अधिक रही, जिससे धार्मिक पर्यटन में पुरुषों की अपेक्षाकृत अधिक सक्रियता परिलक्षित होती है, हालांकि महिलाओं की सहभागिता भी उल्लेखनीय है। आयु वर्ग के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाता 18–30 वर्ष (35.7%) के पाए गए, जो यह दर्शाता है कि युवा वर्ग भी पारंपरिक धार्मिक स्थलों के प्रति आकर्षित हो रहा है, जबकि 31–45 वर्ष (30.2%) और 46–60 वर्ष (21.7%) वर्गों की उपस्थिति यह संकेत देती है कि यह पर्यटन सभी आयु समूहों में समान रूप से लोकप्रिय है। वैवाहिक स्थिति के संदर्भ में विवाहित उत्तरदाता (57.4%) अधिक पाए गए, जिससे पारिवारिक यात्रा की प्रवृत्ति का संकेत मिलता है। शिक्षा स्तर के आधार पर अधिकांश उत्तरदाता स्नातक (45%) एवं स्नातकोत्तर (30.2%) श्रेणी के रहे, जो यह दर्शाता है कि शिक्षित वर्ग भी धार्मिक पर्यटन में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। व्यवसाय के दृष्टिकोण से नौकरीपेशा (38%) और व्यवसायी (24%) वर्ग का प्रभुत्व रहा, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग इस प्रकार के पर्यटन में अधिक संलग्न है, वहीं छात्रों (20.9%) की भागीदारी यह दर्शाती है कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता नई पीढ़ी में भी विकसित हो रही है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तालिकाः 5

उत्तरदाताओं के यात्रा उद्देश्य का वितरण

यात्रा का उद्देश्य	संख्या	प्रतिशत (%)
धार्मिक दर्शन	93	72%
पर्यटन/घूमना	23	18%
अन्य	13	10%
कुल	**129**	**100%**

स्त्रोत– प्राथमिक समंक

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 129 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 72% (लगभग 93 पर्यटक) का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक दर्शन रहा, जिससे यह सिद्ध होता है कि उज्जैन, विशेषकर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, एक सशक्त धार्मिक आस्था केंद्र के रूप में स्थापित है। इसके अतिरिक्त 18% (लगभग 23 उत्तरदाता) पर्यटक सामान्य पर्यटन अथवा घूमने के उद्देश्य से आए, जो यह दर्शाता है कि धार्मिक स्थलों के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं पर्यटन आकर्षण भी लोगों को आकर्षित कर रहे हैं, जबकि 10% (लगभग 13 उत्तरदाता) अन्य उद्देश्यों जैसे पारिवारिक यात्रा या विशेष अवसरों के कारण आए। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि धार्मिक पर्यटन इस क्षेत्र में प्रमुख प्रेरक तत्व है, जो न केवल पर्यटकों की यात्रा का मूल कारण बनता है, बल्कि स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को भी निरंतर प्रोत्साहित करता है।

तालिकाः 6

व्यय का क्षेत्रवार वितरण

क्रम	खर्च का क्षेत्र	प्रतिशत (%)
1	आवास	30%
2	भोजन	25%
3	परिवहन	20%
4	पूजन सामग्री	15%
5	अन्य	10%
कुल		**100%**

स्त्रोत– प्राथमिक समंक

उपरोक्त तालिका के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 129 उत्तरदाताओं के औसत व्यय में सर्वाधिक हिस्सा आवास (30%) का है, जो यह दर्शाता है कि होटल, धर्मशाला एवं अन्य ठहरने की सुविधाएँ स्थानीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान देती हैं। इसके

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पश्चात भोजन (25%) एवं परिवहन (20%) पर व्यय किया जाता है, जिससे खाद्य व्यवसाय एवं परिवहन सेवाओं को भी पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। विशेष रूप से 15% व्यय पूजन सामग्री पर किया जाना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग जैसे धार्मिक स्थलों से जुड़े स्थानीय बाजार–जैसे फूल, प्रसाद, पूजा सामग्री एवं धार्मिक वस्तुएँ–प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं। शेष 10% व्यय अन्य गतिविधियों में होता है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि धार्मिक पर्यटन केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि यह एक व्यापक आर्थिक तंत्र का निर्माण करता है, जिसमें स्थानीय व्यापार, सेवाएँ एवं लघु उद्यम सभी को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है।

तालिकाः 7

पर्यटकों का संतुष्टि स्तर

संतुष्टि स्तर	संख्या (लगभग)	प्रतिशत (%)
उच्च संतुष्टि	75	58%
मध्यम	39	30%
निम्न	15	12%
कुल	**129**	**100%**

स्त्रोत– प्राथमिक समंक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 129 उत्तरदाताओं में से 58% (लगभग 75 पर्यटक) ने उच्च संतुष्टि व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि उज्जैन, विशेषकर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग से संबंधित धार्मिक अनुभव अधिकांश पर्यटकों के लिए संतोषजनक एवं सकारात्मक रहा। वहीं 30% (लगभग 39 उत्तरदाता) ने मध्यम स्तर की संतुष्टि व्यक्त की, जिससे संकेत मिलता है कि कुछ सुविधाएँ अपेक्षानुसार नहीं हैं या उनमें सुधार की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त 12% (लगभग 15 उत्तरदाता) ने निम्न संतुष्टि दर्ज की, जो बुनियादी सुविधाओं जैसे भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता, यातायात व्यवस्था एवं आवासीय सेवाओं में कमियों की ओर संकेत करता है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि अधिकांश पर्यटक संतुष्ट हैं, फिर भी पर्यटन अनुभव को और बेहतर बनाने हेतु आधारभूत संरचना एवं सेवाओं में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है।

6. उपसंहार

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि उज्जैन, विशेषकर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, धार्मिक आस्था के साथ–साथ एक सशक्त आर्थिक तंत्र का भी केंद्र बन चुका है। यहाँ का धार्मिक पर्यटन केवल दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थानीय स्तर पर होटल, धर्मशाला, परिवहन, पूजन सामग्री, हस्तशिल्प एवं सेवा क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रभावित करता हुआ एक संगठित आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करता है। वर्ष

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

2023 से 2024 के मध्य पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि इस तथ्य की पुष्टि करती है कि उज्जैन इन्दौर पर्यटन सर्किट का एक प्रमुख आकर्षण बन चुका है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि अधिकांश पर्यटक धार्मिक उद्देश्य से यहाँ आते हैं, जिससे यह क्षेत्र एक विशुद्ध आस्था–आधारित अर्थव्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है। यद्यपि स्थानीय रोजगार, व्यापार एवं सेवाओं पर इसका सकारात्मक प्रभाव देखा गया है और पर्यटकों का संतुष्टि स्तर मध्यम से उच्च पाया गया है, फिर भी आधारभूत संरचना, भीड़ प्रबंधन एवं अंतरराष्ट्रीय प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि यदि इन चुनौतियों का समुचित समाधान किया जाए, तो उज्जैन न केवल राष्ट्रीय, बल्कि वैश्विक धार्मिक पर्यटन मानचित्र पर और अधिक सशक्त रूप से स्थापित हो सकता है।

7. सुझाव

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार बढ़ाया जाए।
- यातायात एवं आवास सुविधाओं में सुधार किया जाए।
- डिजिटल गाइड एवं सूचना प्रणाली विकसित की जाए।
- स्थानीय उत्पादों को ब्रांडिंग एवं बाजार उपलब्ध कराया जाए।

संदर्भ सूची

1. मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग, (2024), मध्यप्रदेश पर्यटन सांख्यिकी रिपोर्ट 2023–24, भोपालः मध्यप्रदेश शासन।
2. मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग, (2023), मध्यप्रदेश पर्यटन वार्षिक रिपोर्ट 2022–23, भोपालः मध्यप्रदेश शासन।
3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर प्रशासन समिति, (2024), वार्षिक प्रतिवेदन एवं दर्शन व्यवस्था विवरण, उज्जैन।
4. भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय, (2023), India Tourism Statistics 2023, नई दिल्लीः भारत सरकार।
5. महाभारत, (विभिन्न संस्करण), गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. कालिदास, (संस्कृत काल), मेघदूत, विभिन्न प्रकाशन।
7. स्कन्द पुराण, (विभिन्न संस्करण), धार्मिक ग्रंथ प्रकाशन।
8. विश्व पर्यटन संगठन, (2023), Tourism and Economic Impact Report, मैड्रिड।
9. शर्मा, आर. के. (2021), धार्मिक पर्यटन और आर्थिक विकास. नई दिल्लीः शैक्षिक प्रकाशन।
10. गुप्ता, एस. (2020), भारत में पर्यटन प्रबंधन, जयपुरः साहित्य भवन।